International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 4 || April 2024 || PP. 60-66

मुसहर समुदाय का सामाजिक और शैक्षिक स्थिति: गाजीपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में

अवनीश कुमार [1]
शोधार्थी- पी-एच. डी. (शिक्षाशास्त्र), बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ

प्रो. हरिशंकर सिंह[2]
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ

शोधसार
मुसहर समुदाय को उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जातिके अंतर्गत रखा गया जबकि बिहार में महादलित की श्रेणी में रखा गया है।यह समुदाय अपनी सामाजिक पहचान के लिए संघर्षशीलहै। प्रस्तुत शोध पत्र में मुसहर समुदाय की सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति को समझने का प्रयास किया गया। अध्ययनमेंइस समुदाय के पारिवारिक संरचना, आवास, व्यवसाय, शिक्षा, महिला की शैक्षिक स्थिति तथा अस्पृश्यता को केंदीय स्थान दिया गया है। अध्ययन की प्रकृति वर्णात्मकहै। निष्कर्ष के रूप में मुसहरसमुदाय सामजिक वंचना के साथ दरिद्रताके शिकार हैं। इस समुदाय में शिक्षा की भारी कमी, श्रमिकों की बहुलता और बदहाली में जीवन यापन करने को मजबूर है।
शब्द कुंजी: सामाजिक संरचना, शैक्षिक स्थिति, मुसहर समुदाय।

Date of Submission: 11-04-2024 Date of acceptance: 24-04-2024

प्रस्तावना

भारत की सामाजिक की संरचना में जाति व्यवस्था की विभाजक रेखा इतनी प्रतिगामी और अमानवीय है कि एक सभ्य समाज इससे जितनी जल्द मुक्त होगा उसका उतना ही कल्याण होगा। भारतीय समाज धर्म, जाति और संस्कृति के आधार पर बटा हुआ है। भारत में जाति व्यवस्था, सामजिक संरचना में अपनी गहरी पकड़ बना ली है। जिससे व्यक्ति एक विशेष जाति में जन्म लेने के कारण एक-दूसरे से अलग हो जाता है और उसे व्यक्ति चाहकर भी अपनी जातीय पहचान को नहीं बदल पता है।रुढ़िवादी विचार के लोग जाति व्यवस्था को समाज में पदानुक्रमित स्थितियों के माध्यम से बनाए रखा है जिसमें एक जाति को दूसरे से श्रेष्ठ माना जाता है। एक समूह के द्वारा दूसरे समूह का शोषण करने की प्रक्रिया के आधार पर जातियों की श्रेष्टता और हीनता को देखा जा सकता है। जिसमें हीनता वाले समूहों में से दलित एक है। दलित को समाज में सबसे निचले पायदान पर रखा गया है औरइन्हें अधिकारिक रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व दलितों की स्थिति दयनीय थी लेकिन उनके हितो की रक्षा के लिए भारतीय संबिधान में वर्णित प्रावधानों से कुछ समुदायों में बहुतसुधार हुआ है, लेकिन कुछ जातियां आज भी अपना अधिकार और सम्मान पाने के लिए संघर्षरत है। जनगणना 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में 66 अनुसूचित जातियां और 5 अनुसूचित जनजाति शामिल है जिसमें मुसहर जाति अनुसूचित जाति के श्रेणी में शामिल है। इस समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक स्थित इतनी खराब है कि अनुसूचित जाति के साथ रहकर इनका विकास संभव नहीं है। उत्तर-प्रदेश के मुसहर समुदाय की स्थिति को देखते हुए वर्ष 2016 में इस समुदाय को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में शामिल करने के लिए भारत के निम्न सदन के समक्ष सांसदडॉ. महेंद्र नाथ पाण्डेय द्वारा बात रखी गई थी।वर्तमान समय में इनकी स्थिति यथावत् बनी है,जनगणना 2011 के अनुसार 'उत्तर प्रदेश में कुल मुसहरों की जनसंख्या 2,52,135 हैं जो अनुसूचित जाति का लगभग 1.19 प्रतिशत है।जिसमें64270 खेतिहर (दीर्घकालिक और अल्पकालिक) मजदूर जो कुल मुसहर जनसंख्या का 25.49 प्रतिशत है।इनके पास खुद की भूमि नहीं है। इस समुदाय में पारिवारिक उद्योग कर्मी की कुल संख्या 11,809है जो कुल मुसहर जनसँख्या का 4.68 प्रतिशत है। गैर कर्मी (नॉन वर्कर्स) मुसहरों की संख्या 1,44,899 जो कुल मुसहर जनसँख्या का 57.46 प्रतिशत है शेष अन्य कर्मी है'। जिस समुदाय में गैर कर्मियों की जनसँख्या अपनी कुल जनसँख्या का 50 प्रतिशत से अधिक हो उस समुदाय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति दयनीय होना स्वभाविक है। मुसहर समुदाय की आजीविका उनकें शारीरिक श्रम के ऊपर निर्भर करती है और इनके रोजगार के अवसर सीमित है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 70 वर्ष से अधिक बीत जाने के बाद भी इनकी स्थिति में वांछित बदलाव नहीं आ सका। उत्तर प्रदेश में इनकी कुल साक्षरता दर 24.4 प्रतिशत है जो कुल अनुसूचित जातियों में नीचे से चौथे स्थान पर है। भवेश, भी.सिं.(2021). ने अपने अध्ययन के माध्यम से भारतीय समाज की जाति-व्यवस्था में अस्पृश्य जातियों में आखिरी पायदान पर खड़ी मुसहर समुदाय की स्थिति के रूप में उनकी जीवन दृष्टि, आपसी संबंध, दशा और दिशा को दयनीय और निंदनीय बताया।

संबंधित साहित्य

भबानी, (2020), गंगा, के. सी. (2020), राणा, एम. कु. (2017), के अध्ययनों से पता चलता है कि मुसहर समुदाय समुदाय की सामाजिक,आर्थिक और शैक्षिक स्थिति निम्न है। शिक्षा और जागरूकता के आभाव में इस समुदाय में बेगार मजदूरों की संख्या अधिक है जो अपनी पहचान में बदलाव लेन के संघर्षरत है। नृजातीय सम्बन्धी विचारों के साथ मुसहर समुदाय के पोशाक, आभूषण, भोजन-पानी, जीवनचक्र, त्योहारों का वर्णन किया है। गुप्ता, प्री. (2021). यादव, शा. कु.(2020). कुमार, अ. (2014). के अध्ययनों से पता चलता है कि मुसहर समुदाय गरीबी, अशिक्षा व बेरोजगारी के कारण गाँव के लोग मजदूरी के रूप में पलायन के लिए मजबूर है। मुसहर समुदाय भूमिहीन कृषि मजदूर है। यह समुदाय हिन्दू हरार्की सिस्टम में अछूत जातियों में सबसे निचले स्थान पर है।वर्तमान समय में देश में जाति व्यवस्था को एक दमनकारी नीति को अतीत के रूप में देखा जाता है लेकिन कुछ जातियों के साथ आज भी उसकी पुनरावृति हो रहती है।

शोध का औचित्य

शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि और शिक्षा व्यवस्था आदि का निर्धारण समाज की आवश्यकता तथा उसकी संस्कृति के अनुरूप होती है तो वह समुदाय उन्नत के मार्ग पर होता है। मुसहर समुदाय शिक्षा के क्षेत्र में अधिक पिछड़ा हुआ है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सहभागिता किस स्तर की है, शिक्षा को लेकर इस समुदाय की धारणाएं किस प्रकार की है आदि का पता चल सकेगा।

शोध का महत्त्व

शोध के उद्देश्य तथा नवाचार से प्राप्त तथ्यों के आधार पर इस समुदाय के शैक्षिक विकास के लिए यथा संभव प्रयास किये जा सकेगे जिससे इस समुदाय का शिक्षा के साथ-साथ अन्य पक्षों का विकास हो सके। इस समुदाय के सामाजिक परिवेश के अनुसार शैक्षणिक प्रक्रियाओं को जोड़कर शिक्षण कार्य किये जा सकेगे। इस समुदाय को ध्यान में रखकर नीतिकारों को योजनाओं का निर्माण करने तथा उसके क्रियान्वन में सहयोग मिल सकेगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मुसहर समुदाय की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का आकलन करना।

शोध विधि: प्रस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक प्रकार का है, अध्ययन के लिए सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण: प्रस्तुत शोध कार्य में उपकरण के रूप में स्वनिर्मित चेकलिस्ट और साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श: प्रस्तुत शोध कार्यमें उत्तर प्रदेश में गाजीपुर जनपद के जखनियां तहसील के मुसहर जाति को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया है। प्रतिदर्श के चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में कुल चार गाँवों का चयन किया गया है।चयनित प्रत्येक गांव से दस परिवारों तथा सम्बंधित विद्यालयों को अध्ययन में शामिल किया गया।

क्षेत्र परिचय: शोध अध्ययन के लिए क्षेत्र का चयन मुसहर जाति की जनश्रुति के आधार पर मुसहर बाहुल्य क्षेत्र के रूप में जखनियां तहसील के चार गाँव- मंझनपुर मदरा, पनिष्का, कनुवान चट्टीऔर टोडरपुरका चयन किया गया। इस गाँवों से सम्बंधित सरकारी विद्यालय- प्राथमिक विद्यालय मंझनपुर मदरा, प्राथमिक विद्यालय खानपुर रघुवर, प्राथमिक विद्यालय कृत सिंहपुर का चयन किया गया।सरकारी विद्यालय का चयन इसलिए किया गया कि इन गाँवों के सभी मुसहरविद्यार्थी पढ़ने के लिएसरकारी विद्यालय में जाते है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं विवेचन

उद्देश्य-1. मुसहर समुदाय की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।

मुसहर समुदाय के सामाजिक स्थिति को समझने के लिए इस समुदाय के पारिवारिक संरचना, आवास,व्यवसाय, शिक्षा, महिला स्थिति तथा अस्पृश्यता को केंदीय स्थान देते हुए इस समुदाय के व्यक्तियों से किये गए साक्षात्कार के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

1.1 परिवार

सामाजिक समूह के आधार पर परिवार को एक संस्था के रूप में देखा जाता है जहां व्यक्ति निश्वार्थ भाव से सभी स्तरों पर एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना रखते है।अध्ययन के लिए चयनित गाँव की पहचान समाज की मुख्य धारा से अलग-थलग के रूप में हुई। इन चार गाँवों में से तीन गाँवों ऐसे है जो मुसहर समुदाय के साथ अन्य समुदाय के लोग नहीं रहते है केवल कनुवान चट्टी एक ऐसा मुसहर गाँव जहां, इस समुदाय के साथ अनुसूचित जाति और पिछड़ी जाति के लोग रहते है। इस समुदाय में एकल परिवार की बहुलता है, पितृसत्तात्मक परिवार की सामजिक व्यवस्था है।

तालिका संख्या-1

क्र. सं.	परिवार के प्रकार	आवृति	प्रतिशत
1.	एकल परिवार	28	70
2.	संयुक्त परिवार	12	30
योग		40	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय में एकल परिवार की बहुलता है। विवाह होते ही कुछ महीनों बाद पुत्र परिवार से अलग रहने लगता है। एक 52 वर्ष की महिला कहती है कि 'लड़कों की शादी समय से कर देना सही रहता है, जहां रहेगें वहां परिवार के साथ रहेगें, कमाने-खाने के लिए तो दुनिया ही कमा-खा रही है'।

1.2 आवास

मुसहर समुदाय अपने आवास निर्माण में स्थानीय सामग्री के रूप में पतलो, कुश (एक प्रकार के झाड़) और बास के बम्बू का उपयोग करते है। इनके आवास अधिकांशतः झोपड़ियों के बने होते जिसको ये लोग*मणई* (झोपड़ी) कहते है। यह समुदाय सीमित संसाधन में जीवन-यापन करते है। एकल परिवार और झोपड़ियों की बहुलता के कारण समाज में अन्य समुदायों की तुलना में यह समुदाय अपनी अलग पहचान रखती है।

तालिका संख्या- 2

क्र. सं.	घर के प्रकार	आवृति	प्रतिशत
1.	कच्चा घर (झोपड़ी)	17	42.5
2.	पक्का घर	2	5
3	अर्द्ध कच्चा-पक्का	21	52.5
योग		40	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-2 से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय के पास रहने के लिए उपयुक्त घरों का अभाव है। 42.5 प्रतिशत लोगों के पास घर के नाम पर रहने के लिए झोपड़ी है।इस समुदाय के अधिकांश लोगों के पास दो से अधिक घर (रूम) नहीं है जिसमें एक घर आवश्यक वस्तुएं रखने के लिए तथा एक घर में शयनकक्ष के रूप में उपयोग करते है। 52.5 प्रतिशत लोगों के पास रहने के लिए अर्द्ध कच्चा-पक्का घर है जिसमें अधिकांश पक्के मकान प्रधानमंत्री आवास योजना के सहयोग से बना है। विचारणीय है कि अधिकांश पक्के बने घरों की दिवालों की सफाई (प्लास्टर) नहीं हुए है। पांच प्रतिशत लोग ऐसे है जिनके पास रहने के लिए पक्के मकान बने है जो प्रधानमंत्री आवास योजना और व्यक्तिगत सहयोग से बना है।

1.3 शिक्षा

मुसहर समुदाय का शिक्षा में स्थिति निम्न है जनगणना- 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में इनकी साक्षरता दर 24.4 प्रतिशत है जो अनुसूचित जातियों में नीचे से चौथे स्थान पर है। वर्तमान समय में यह समुदाय शिक्षा के प्रति जागरूक हुई है, इनकी शिक्षिक स्थिति को निम्नलिखित के मध्ययम से समझा जा सकता है।

तालिका संख्या- 3

क्र. सं.	शैक्षिक स्तर	आवृति	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	23	57.5
2.	प्राथमिक	9	22.5
3.	उच्च प्राथमिक	6	15
4.	माध्यमिक	2	5
5.	उच्च माध्यमिक	0	0
6.	स्नातक	0	0
	योग	40	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-3 से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय में शिक्षा का स्तर निम्न है, 57.5 प्रतिशत लोग निरक्षर, 22.5 प्रतिशत लोग प्राथमिक, 15 प्रतिशत उच्च प्राथमिक और 5 प्रतिशत माध्यमिक तक की शिक्षा ली है। 65 वर्ष के एक व्यक्ति का कहना है कि 'मेरे समय में इतने स्कूल नहीं थे और सब लोग नहीं पढ़ा पाते थे अपने लड़के को, जो पढ़ लेता था उसकी नौकरी पक्की समझी जाती थी लेकिन अब तो मुसहर भी अपने बच्चे को पढ़ा ले रहे है तब कोई नहीं पढ़ा पता था।

तालिका संख्या- 4

क्र. सं.	शैक्षिक स्तर	महिला		पुरुष	
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	16	94.11	7	30.43
2.	प्राथमिक	5	5.89	9	39.13
3.	उच्च प्राथमिक	0	0	6	26.08
4.	माध्यमिक	0	0	2	8.69
5.	उच्च माध्यमिक	0	0		0
6.	स्नातक	0	0		0
	योग	17	100	23	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-4 से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय में महिला शिक्षा की स्थिति बहुत दयनीय है 17 महिलाओं में से एक महिला प्राथमिक स्तर की शिक्षा ली है।मुसहर समुदाय का शिक्षा से लगाव बढ़ रहा है। येसमाज में शिक्षा से सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की अपेक्षा रख रहे है।

1.4 व्यवसाय

मुसहर समुदाय के परम्परागत व्यवसाय के रूप में पेड़ के पत्तों से पत्तल और दोने बनाना, दुल्हन की डोली उठाना आदि कार्य हुआ करते थे। ब्लंट, (1969)के अनुसार 'मुसहर समुदाय का एक वर्ग को दोलकर कहा जाता है'। लेकिन आधुनिकीकरण ने इनके व्यवसायों को समाप्त कर दिए। वर्तमान समय में यह समुदाय ईट भट्ठे पर मजदूरी, दैनिक मजदूरीऔर बटई पर खेती करने के कार्य करते है। हंटरके अनुसार मुसहर अच्छे लोग है इस कारण इंडिगो बगान के कारखानों में इनकी मांग अधिक थी।

तालिका संख्या-5

क्र. सं.	व्यवसाय के प्रकार	आवृति	प्रतिशत
1.	परम्परागत कार्य	0	0
2.	दैनिक मजदूरी	22	55
3.	कृषि मजदूरी	16	40
4.	पशु पालन (बकरी)	2	5
	योग	40	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-5 से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय का व्यवसाय मजदूरी है जिसमे 55 प्रतिशत दैनिक मजदूर है जो ईट भट्ठे तथा दिहाड़ी मजदूर है, 40 प्रतिशत कृषि मजदूर तथा 5 प्रतिशत पशु पालन के रूप में बकरी पालन का कार्य करते है।

1.5 अस्पृश्यता

समाज में एक लोकोक्ति 'अस्पृश्यता एक अभिशाप है'प्रचलित है औरसिविल अधिकार संरक्षण 1955 जिसे अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम भी कहा जाता है जैसेप्रावधानभारतीय संविधान में किया गया। जो अस्पृश्यता को दंडनीय अपराध माना गया है।बावजूद इसके समाज में वंचितों के साथ हमेशा भेद-भाव होते रहे है।जिसके कारण इस समाज का विकास नहीं हो सका और अभी तक मुसहर समुदाय सामाजिक वंचना की दश को झेल रहा है। वर्तमान समय में मुसहरों के साथ विभिन्न स्थानों पर हुए भेद-भाव निम्नलिखित है।

तालिका संख्या-6

क्र. सं.	छुआ-छूत के पक्ष	आवृति	प्रतिशत
1.	हाँ	19	47.5
2.	नहीं	21	52.5
	योग	40	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-6 से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में समाज में छुआ-छुत की समस्याएं विद्यमान है, 47.5 प्रतिशत मुसहरों के साथ छुआ-छूत का सामना करना किये वहीं 52.5 प्रतिशत मुसहरों के साथ किसी प्रकार के भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा।

1.6 मुसहरों के साथ छुआ-छूत होने वाले स्थान: भारतीय संविधान ने शोषितों तथा वंचितों के साथ सामाजिक,लोक मनोरंजन स्थानऔरधार्मिककार्य स्थलों पर किसी प्रकार के भेदभाव को निषेध करता है। लेकिन वर्तमान समाज में आज भी रूढ़िवादी विचार के लोगों द्वारा मुसहर समुदाय को सामाजिकवंचनाका सामना करना पड़ता है।

तालिका संख्या-7

क्र. सं.	छुआ-छूट करने का स्थान	आवृति	प्रतिशत
1.	कार्य स्थल	14	73.69
2.	सामाजिक स्थल	3	15.79
3.	धार्मिक स्थल	2	10.52
	योग	19	100

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-7 से स्पष्ट होता है कि जिन मुसहरों के छुआ-छूत की समस्याओं का सामना किया उसमें 73.69 प्रतिशत लोगों के साथ कार्य स्थल, 15.79 प्रतिशत लोगों के साथ सामाजिक स्थल तथा 10.52 लोगों के साथ धार्मिक स्थलों पर भेदभाव हुए।

उद्देश्य-2. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का आकलन करना।

विद्यालय में नामांकित मुसहर विद्यार्थी

मुसहर विद्यार्थियों के नामांकन की स्थिति जानने के लिए अध्ययन के लिए चयनित गाँवों का सर्वे करने पर के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए

तालिका संख्या-9

क्र. सं.	नामांकित बच्चें	मंझनपुर मदरा	पनिष्का	कनुवान चट्टी	टोडरपुर
1.	प्राथमिक (I-V)	43	24	5	21
2.	उच्च प्राथमिक (VI-VIII)	29	6	2	9
	योग	72	30	7	30

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-8 से ज्ञात होता है कि मंझनपुर मदरा में 72, पनिष्का में-30 कनुवान चट्टी में-7 तथा तोडरपुर में 30 विद्यार्थी नामांकित है। इन गाँवों के अभी सभी बच्चें किसी न किसी विद्यालय में नामांकित है।एक प्रधानाध्यापक बताते है कि सरकार के द्वारा निर्धारित लक्ष्य शत प्रतिशत नामांकन को प्राप्त करने के लिए बच्चों के नामांकन के हेतु गाँव के सभी लड़कों के नामांकन की पड़ताल किया गया। इसके लिए गाँव की आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं से मदद लिया गया, उनके पास नवजात शिशुओं के आकड़े रहते है जिससें उन बच्चों की पहचान हो जाती है जिनकी उम्र विद्यालय आने योग्य हो गई रहती है।

नियमित विद्यालय आने वाले विद्यार्थी

नियमित विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों की पहचान के लिए एक सप्ताह विद्यालय का अवलोकन किया गया। इस निर्धारित अवधि में उपस्थित आने वाले विद्यार्थियों को नियमित विद्यार्थी के रूप रखा गया जिसका विवरण निम्नलिखित है।

तालिका संख्या-9

क्र. सं.	नामांकित बच्चें	मंझनपुर मदरा	पनिष्का	कनुवान चट्टी	टोडरपुर
1.	प्राथमिक (I-V)	38	21	4	17
2.	उच्च प्राथमिक (VI-VIII)	21	3	0	3
	योग	59	24	4	20

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या-9 से पता चलता है कि गाँव मंझनपुर मदरा के प्राथमिक में 11.6 प्रतिशत, उच्च प्राथमिक में 27.58 प्रतिशत बच्चें अनुपस्थित है, पनिष्का में प्राथमिक में 12.5 प्रतिशत, उच्च प्राथमिक में 50 प्रतिशत बच्चें, कनुवान चट्टी के प्राथमिक में 20 प्रतिशत, उच्च प्राथमिक में 100 प्रतिशत और टोडरपुर के प्राथमिक में 19.04 प्रतिशत, उच्च प्राथमिक में 66.66प्रतिशत बच्चें अनुपस्थित रहते है। प्राथमिक की तुलना में उच्च प्राथमिक में मुसहर बच्चें अधिक अनुपस्थित है। बच्चों की उपस्थिति को लेकर एक अध्यापक बताते है कि इस समुदाय के लोगों का जीवन पूरी तरह मजदूरी पर आश्रित है और इनमें बाल श्रम देखने मिलता है । जिससें बच्चें नियमित विद्यालय नहीं आ पाते है।

निष्कर्ष:

मुसहर समुदाय का सामाजिक और शैक्षिक स्थिति से सम्बंधित अध्ययन के अंतर्गत पारिवारिक संरचना, आवास, व्यवसाय, शिक्षा, महिला स्थिति तथा अस्पृश्यता, विद्यालय में नामांकित मुसहर विद्यार्थी औरनियमितविद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

सामाजिकअध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग बसी हुईहै। इस समुदाय में पितृसत्तात्मकऔर एकल परिवार की बहुलता पाई जाती है। विवाह होते ही पुत्र माता-पिता से अलग रहने लगते हैं। यह समुदाय सीमित संसाधन में अपना जीवन यापन करते है। इनके आवास झोपड़ीके साथअर्द्ध निर्मित पक्के मकान होते है।पटेल, सुधीर. (2011). मुसहर समुदाय अति दरिद्र और पिछड़े हुए हैं, ये सामाजिक वंचना के साथ-साथ गरीबी और भुखमरी को झेलते है'। यह समुदाय पूर्ण रूप से श्रमिक मजदूरहै, कार्य स्थलों पर इनके साथ भेदभाव देखने को मिलते हैं। जोशुआ प्रोजेक्ट रिपोर्ट (2015) के अनुसार'2.5 लाख से अधिकमुसहर उत्तर प्रदेश में निवास करते है औरअधिकांस लोग कृषि कार्यों में श्रमिक है'।वोस, (2018) के अनुसार 'मुसहरसमुदाय समाज के सबसे निचले पायदान पर है इनके प्रति लोगों के मन में अभी भी भेदभाव और भिन्नता की भावना देखने को मिलती है'।इनमें शिक्षा की बहुत कमी है लेकिन वर्तमानसमय में शिक्षाके प्रति जागरूक हुए है। प्राथमिक स्तर पर इनकें सभी बच्चें विद्यालय से जुड़े है।

सन्दर्भ सूची

[1]. Gupta, Priti. (2021). Analyzing Women's Exploitation in Agrarian Society: A Case of Musahar Community in Bihar. Research Journal of Humanities and Social Sciences. 12(4) 230-4. doi: 10.52711/2321-5828.2021.00041

[2]. https://amp-scroll-in.edn.ampproject.org/v/s/amp.scroll.in/article/884644/ups-musahars-face-such-intense-discrimination-that-even-healthcare-is-denied-to-thems Access on 16/01/2024

[3]. https://joshuaproject.net/people_groups/17711/IN

[4]. Hunter, W.W. (1877). Statistical Account of Bengal, London: Trubner & co, pp 48.

[5]. Patel, Sudhir, Rahul (2011). Socio-Economy and Health among the Musahar of Eastern Uttar Pradesh, (Asian Man an international Journal 5

[6]. Pokhrel, B. (2020). strained identity: Culture and Religious Rituals of a Musahar Community. Social Inquiry: Journal of Social Science Research 2(1), 128-150.

[7]. Rana, Madan Kumar.(2017). Occupation and educational status of Musahar A case study of Bardibas Municipality, Mahottari. Published thesis summated to central department of rural development tribhuvan university kritipur Kathmandu, Nepal.

[8]. कुमार, अ. (2014). उच्च शिक्षा की पहुँच में बाधाएं और समता के अवसर बिहार के महादलितों का केस अध्ययन,*परिप्रेक्ष्य* दिसंबर, 21(3)85-100.

[9]. ब्लंट,ई. ए. एच. (1969). द *कास्ट सिस्टमऑफ़ नार्थन इंडिया*, नई दिल्ली एस.चंद & सीओ. राम नगर पृष्ट 241.

[10]. यादव, कु. शा. (2020). मुसहर समुदाय : एक समाजशास्त्रिय अध्ययन (कुशीनगर जिले में शिवपुर ग्राम के विशेष सन्दर्भ में). *मुक्त शब्द* . ix (iv) 5-11

[11]. https://socialjustice.gov.in/writereaddata/UploadFile/PCR%20Act,%201955.pdf